परमात्म ऊर्जा

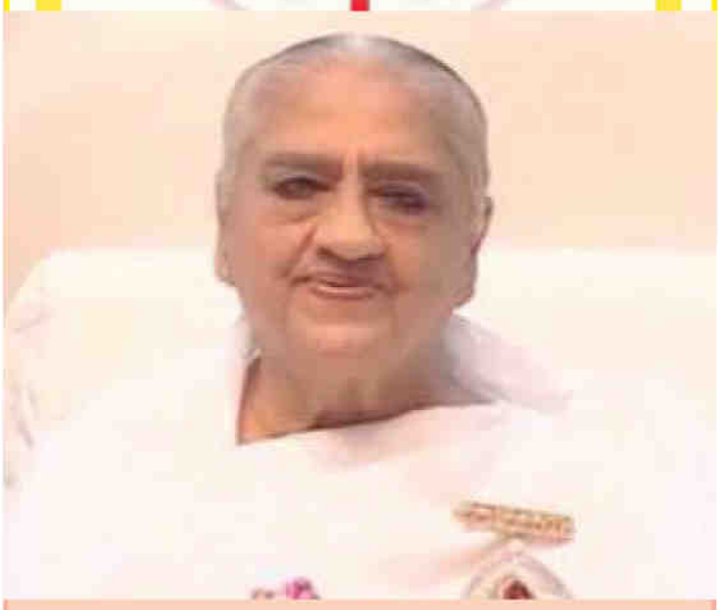

मंथन करने के लिए तो बहुत खज़ाना है। इसमें मन को बिज़ी रखना है। समय की रफ्तार तेज है व आप लोगों के पुरुषार्थ की रफ्तार तेज है? अगर समय तेज चल रहा है और पुरुषार्थ ढीला है तो उसकी रिज़ल्ट क्या होगी? समय आगे निकल जायेगा और पुरुषार्थी रह जायेंगे। समय की गाड़ी छूट जायेगी। सवार होने वाले रह जायेंगे। समय की कौन-सी तेज देखते हो? समय में बीती को बीती करने की तेज है। वही बात को समय फिर कब रिपीट करता है? तो पुरुषार्थ की जो भी कमियाँ हैं उसमें बीती को बीती समझ आगे हर सेकंड में उन्नति को पाते जाओ तो समय के समान तेज चल सकते हो। समय तो रचना है ना! रचना में यह गुण है तो रचयिता में भी होना चाहिए। ड्रामा क्रिएशन है तो क्रिएटर के बच्चे आप हो ना! तो क्रिएटर के बच्चे क्रिएशन से ढीले क्यों? इसलिए सिर्फ एक बात का ध्यान रहे कि जैसे ड्रामा में हर सेकंड अथवा जो बात बीती, जिस रूप से बीत गयी वह फिर से रिपीट नहीं होगी फिर रिपीट होगी 5000 वर्ष के बाद। वैसे ही कमज़ोरियों को बार-बार रिपीट करते हो? अगर यह कमज़ोरियां रिपीट न होने पाएं तो फिर पुरुषार्थ तेज हो जायेगा। जब कमज़ोरी समेटी जाती है तब कमज़ोरी की जगह पर शक्ति भर जाती है। अगर कमज़ोरियां रिपीट होती रहती हैं तो शक्ति नहीं भरती। इसलिए जो बीता सो बीता, कमज़ोरी की बीती हुई बातें फिर संकल्प में भी नहीं आनी चाहिए। अगर संकल्प चलते हैं तो वाणी और कर्म में आ जाते हैं।

संकल्प में खत्म कर देंगे तो वाणी और कर्म में नहीं आयेंगे। फिर मन-वाणी-कर्म तीनों शक्तिशाली हो जायेंगे। बुरी चीज़ को सदैव फौरन ही फेंका जाता है। अच्छी चीज़ को प्रयोग किया जाता है तो बुरी बातों को ऐसे फेंको जैसे बुरी चीज़ को फेंका जाता है। फिर समय पुरुषार्थ से तेज नहीं जाएगा। समय का इंतज़ार आप करेंगे तो हम तैयार बैठे हैं। समय आये तो हम जाएं। ऐसी स्थिति हो जाएगी। अगर अपनी तैयारी नहीं होती है तो फिर सोचा जाता है कि समय थोड़ा हमारे लिए रूक जायेगा।

कथा सरिता

कवच से सुरक्षा

एक सरोवर में विशाल नाम का एक कछुआ रहा करता था। उसके पास एक मजबूत कवच था। यह कवच शत्रुओं से बचाता था। कितनी बार उसकी जान कवच के कारण बची थी। एक बार भैंस तालाब पर पानी पीने आई। भैंस का पैर विशाल पर पड़ गया। फिर भी विशाल को कुछ नहीं हुआ। उसकी जान कवच से बची थी। उसे काफी खुशी हुई क्योंकि बार-बार उसकी जान बच रही थी।

यह कवच विशाल को कुछ दिनों में भारी लगने लगा। उसने सोचा इस कवच से बाहर निकल कर ज़िंदगी को जीना चाहिए। अब मैं बलवान हो गया हूँ। मुझे कवच की ज़रूरत नहीं है। विशाल अगले ही दिन कवच को तालाब में छोड़कर आस-पास घूमने लगा।

अचानक हिरण का झुंड तालाब में पानी पीने आया। ढेर सारी हिरनियां अपने बच्चों के साथ पानी पीने आई। उन हिरणियों के पैरों से विशाल को चोट लगी, वह रोने लगा। आज उसने अपना कवच नहीं पहना था। जिसके कारण उसे काफी ज़ोर से चोट लगी। विशाल रोता-रोता वापस तालाब में गया और कवच को पहन लिया। कम से कम कवच से जान तो बचती है।

सीख : प्रकृति से मिली हुई चीज़ को हमें सम्मान पूर्वक स्वीकार कर लेना चाहिए।

मित्रता हो निःस्वार्थ भाव से

मोती तीसरी कक्षा में पढ़ता था। वह स्कूल जाते समय अपने साथ दो रोटी लेकर जाता। रास्ते में मंदिर के बाहर एक छोटी-सी गाय रहती थी। वह दोनों रोटी उस गाय को खिलाया करता था। मोती कभी भी गाय को रोटी खिलाना नहीं भूलता। क भी-क भी स्कूल के लिए देर होती तब भी वह बिना रोटी खिलाए नहीं जाता। स्कूल में लेट होने के कारण मैडम डांट भी लगाती थी। वह गाय इतनी प्यारी थी, मोती को देखकर बहुत खुश हो जाती। मोती भी उसको अपने हाथों से रोटी खिलाता। दोनों बहुत अच्छे दोस्त बन गए थे। एक दिन की बात है मोती बाज़ार से सामान लेकर लौट रहा था। मंदिर के बाहर कुछ लड़कों ने उसे पकड़ लिया। मोती का सामान छीनने लगे। गाय ने मोती को जब संकट में देखा तो उसको बचाने के लिए दौड़ी। गाय को अपनी ओर आता देख सभी लड़के नौ-दो ग्यारह हो गए। मोती ने गाय को गले लगा लिया, बचाने के लिए धन्यवाद कहा।

सीख : गहरी मित्रता सदैव सुखदायी होती है। निःस्वार्थ भाव से व्यक्ति को मित्रता करनी चाहिए। संकट में मित्र ही काम आता है।

निरन्तर प्रयास करते रहें

रानी एक चींटी का नाम है जो अपने दल से भटक चुकी है। घर का रास्ता नहीं मिलने के कारण, वह काफी देर से परेशान हो रही थी। रानी के घर वाले एक सीध में जा रहे थे तभी जोर से हवा चली,सभी बिखर गए। रानी भी अपने परिवार से दूर हो गई। वह अपने घर का रास्ता ढूंढने में परेशान थी।

काफी देर भटकने के बाद उसे जोर से भूख और प्यास लगी। रानी जोर से रोती हुई जा रही थी। रास्ते में उसे गोलू के जेब से गिरी हुई टॉफी मिल गई। रानी के भाग्य खुल गए। उसे भूख लग रही थी और खाने को टॉफी मिल गयी थी। रानी ने जी भर के टॉफी खाई, अब उसका पेट भर गया।

रानी ने सोचा क्यों न इसे घर ले चलूँ, घर वाले भी खाएंगे। टॉफी बड़ी थी, रानी उठाने की कोशिश करती और गिर जाती। रानी ने हिम्मत नहीं हारी। वह दोनों हाथ और मुंह से टॉफी को मजबूती से पकड़ लेती है। घसीटते-घसीटते वह अपने घर पहुंच गई। उसके मम्मी-पापा और भाई-बहनों ने देखा तो वह भी दौड़कर आ गए। टॉफी उठाकर अपने घर के अंदर ले गए। फिर क्या था? सभी की पार्टी शुरु हो गई।

सीख : लक्ष्य कितना भी बड़ा हो निरंतर संघर्ष करने से अवश्य प्राप्त होता है।

बाढ़-बिहार। स्थानीय सेवाकेन्द्र ओम् शांति भवन में ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका डॉ. दादी जानकी के द्वितीय पुण्य स्मृति दिवस को 'वैश्विक आध्यात्मिक जागृति दिवस' के रूप में मनाया गया। इस मौके पर ब्र.कु. ज्योति बहन, श्री बाल शनि धाम मंदिर बाढ़ के संस्थापक नागा शिव जी मुनि उदासीन, संस्थान के वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. विपिन भाई सहित अन्य गणमान्य लोगों एवं ब्र.कु. भाई-बहनों ने दादी को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

ब्रह्मपुर-पी.यू.आर.सी.(ओडिशा)। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत आयोजित 'आत्मनिर्भर किसान सम्मेलन' के दौरान सभी किसानों को आत्मनिर्भर बनने की शपथ दिलाते हुए राजयोगी ब्र.कु. शशिकांत भाई, ग्रासिम के युनिट हेड दिगविजय पांडे, गंजाम जिले के 'आत्मा' के प्रकल्प अधिकारी अजीत महारणा, ब्रह्माकुमारीज़ ग्राम विकास प्रभाग के उपाध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. राजू भाई, ब्रह्मपुर उपक्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. मंजू दीदी, ब्र.कु. सुमंत भाई, ब्र.कु. देवराज भाई, पीयूआरसी की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. माला दीदी तथा अन्य।